भारतीय ज्ञान परंपरा में बौद्ध स्तूपों का योगदान

Dr. Sonu
Post-Doctoral Fellow Department of Buddhist studies University of Delhi

सारांश—यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के भीतर बौद्ध स्तूप की बहुआयामी भूमिका की जांच करता है। स्तूप को केवल एक वास्तुशिल्प या धार्मिक वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान प्रसारण के एक जीवित केंद्र के रूप में मानते हुए धीरे-धीरे एक जटिल स्थापत्य और अनुष्ठानिक संस्था में विकसित हुआ जिसने भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख आयामों को मूर्त रूप दिया, व्यवस्थित किया और प्रसारित किया। बौद्ध परंपराओं के भीतर, स्तूप में एक साथ अवशेष रखने की जगह, ब्रह्मांडीय चित्र, शैक्षणिक उपकरण और सामाजिक-राजनीतिक स्मारक के रूप में काम किया जिससे यह एक महत्वपूर्ण स्थल बन गया जहाँ सैद्धांतिक, नैतिक और ब्रह्मांडीय ज्ञान मठवासी और आम समुदायों दोनों के लिए स्थानिक और दृश्य रूप उभर कर आया। यह शोध पत्र स्तूप की भूमिका को एक मूर्त ज्ञान परंपरा के रूप में भारतीय ज्ञानमीमांसीय चिंतन (प्रमाण सिद्धांत), भारतीय शिक्षाशास्त्र और सामाजिक स्मृति की प्रथाओं को ध्यान में रखकर जांचता है और यह तर्क देता है कि स्तूप को केवल एक स्थापत्य प्रकार या अवशेष-मंदिर तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि इसे एक घने सांकेतिक क्षेत्र के रूप में समझा जाना चाहिए जिसमें कथात्मक शैली, शिलालेख, परिक्रमा पथ और अक्षीय संरेखण जानने के तरीकों के रूप में धारणा, अनुमान और गवाही को संरचित करने के लिए एक साथ काम करते हैं। यह पत्र जांचता है कि कैसे पुरालेखीय रिकॉर्ड और स्तूपों के आसपास के अनुष्ठान प्रदर्शनों ने निर्भर उत्पत्ति, अनित्यता और जागृति के मार्ग जैसे मौलिक बौद्ध विचारों को मूर्त रूप दिया। यह आगे पता लगाता है कि कैसे संरक्षण कार्यों, व्यापार मार्गों और शाही नीतियों ने क्षेत्रों में नैतिक और राजनीतिक ज्ञान प्रसारित करने के लिए स्तूपों का उपयोग किया, जिससे बौद्ध संस्थानों को ज्ञान के संरक्षण और प्रसार के व्यापक भारतीय सभ्यतागत ढांचे में एकीकृत किया गया। भारतीय ज्ञान परंपरा के नजरिए से स्तूप को पढ़कर, यह पत्र दक्षिण एशिया में ज्ञानमीमांसीय अभ्यास के स्थानिक, दृश्य और प्रदर्शनकारी आयामों पर प्रकाश डालता है और सुझाव देता है कि भारतीय बौद्धिक इतिहास के किसी भी व्यापक विवरण में ग्रंथों और विद्वानों की परंपराओं के साथ-साथ ऐसे अनुष्ठान-स्थापत्य माध्यमों को भी शामिल किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्द—स्तूप, भारतीय ज्ञान परंपरा, प्रमाण, ज्ञानमीमांसा, तीर्थयात्रा, सामाजिक स्मृति, वास्तुकला।

I. परिचय

बौद्ध स्तूप एशिया में सबसे स्थायी सांस्कृतिक रूपों में से एक है जो सिर्फ़ एक धार्मिक स्मारक नहीं, बल्कि एक ज्ञान परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है जो स्थानीय पारिस्थितिक, सामाजिक, अनुष्ठानिक और शिल्प-आधारित ज्ञान से जुड़ी हुई है। ऐतिहासिक रूप से बुद्ध के शारीरिक अवशेषों से जुड़े अंतिम संस्कार स्मारकों के रूप में उभरने के बाद, स्तूप जटिल प्रतीकात्मक संरचनाओं में विकसित हुए जो ब्रह्मांडीय सिद्धांतों, स्थानिक दर्शन, अनुष्ठान निर्देशों और स्थापत्य तकनीकों को दर्शाते हैं।[1] सदियों से, स्तूप गाँव के जीवन, तीर्थयात्रा भूगोल, मठवासी अर्थव्यवस्थाओं, कारीगर संघों और अनुष्ठान कैलेंडर का अभिन्न अंग बन गए, जिससे वे भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का एक महत्वपूर्ण घटक बन गए।

भारतीय ज्ञान परंपरा का मतलब स्थानीय, समुदाय-आधारित ज्ञान के ऐसे समूह हैं जो अनुभव पर आधारित होते हैं, मौखिक रूप से या अभ्यास के माध्यम से प्रसारित होते हैं, और विशिष्ट सांस्कृतिक और पारिस्थितिक संदर्भों में निहित होते हैं।[2] जब दक्षिण एशिया, हिमालयी क्षेत्र, मध्य एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और पूर्वी एशिया के कुछ हिस्सों में बौद्ध समुदायों पर विचार किया जाता है, तो स्तूप सांस्कृतिक स्मृति और व्यावहारिक ज्ञान के स्थायी भंडार के रूप में काम करते हैं। वे स्मृति सहायक उपकरणों, शैक्षणिक संरचनाओं, पर्यावरणीय डेटा के अभिलेखागार और शिल्प और अनुष्ठान ज्ञान के अंतर-पीढ़ीगत प्रसारण के केंद्रों के रूप में कार्य करते हैं।

आधुनिक विद्वत्ता IKS को बनाए रखने में धार्मिक वास्तुकला की भूमिका को तेजी से पहचान रही है। बौद्ध स्तूप मौखिक परंपराओं, अनुष्ठान ज्ञान, कलात्मक उत्पादन, स्थानिक अनुभूति, पारिस्थितिक प्रबंधन और नैतिक अभ्यास को एक साथ लाकर इस भूमिका का उदाहरण देते हैं।[3] यह पत्र तर्क देता है कि स्तूप निष्क्रिय संरचनाएँ नहीं हैं, बल्कि सक्रिय ज्ञान केंद्र हैं जिनके माध्यम से समुदाय भौतिक और प्रतीकात्मक रूपों में भारतीय ज्ञान उत्पन्न, संरक्षित और प्रसारित करते हैं। अपनी निर्माण प्रक्रियाओं, अनुष्ठानिक उपयोगों, प्रतिमा विज्ञान कार्यक्रमों और स्थानिक व्यवस्थाओं के माध्यम से, स्तूप विविध बौद्ध क्षेत्रों में सांस्कृतिक निरंतरता और अनुकूल लचीलेपन को बनाए रखते हैं।

स्तूप की इस व्यापक ज्ञान संबंधी भूमिका की जाँच करने के लिए यह पत्र पुरातात्विक अध्ययनों, कला ऐतिहासिक विश्लेषणों,और ऐतिहासिक ग्रंथों पर आधारित है। यह स्तूप को ब्रह्मांड विज्ञान, पारिस्थितिकी, शिल्प, उपचार और शासन से संबंधित भारतीय ज्ञान परंपरा में अंतर्निहित एक बहु-आयामी सांस्कृतिक प्रौद्योगिकी के रूप में स्थापित करता है। यह दिखाने की कोशिश करता है कि स्तूप किस तरह एक प्रतीकात्मक वस्तु और एक जीवित संस्था दोनों के रूप में काम करता है जो सामुदायिक ज्ञान निर्माण के लिए आवश्यक है।

II. भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS): एक वैचारिक ढाँचा

भारतीय ज्ञान परंपरा से तात्पर्य ज्ञान, कौशल और विश्वासों के उन समूहों से है जिन्हें समुदायों ने अपने पर्यावरण के साथ लंबे समय तक बातचीत के माध्यम से विकसित किया है । IKS में पारिस्थितिक ज्ञान, ब्रह्मांड विज्ञान, शिल्प परंपराएँ, मौखिक कथाएँ, सामाजिक मानदंड और धार्मिक प्रथाएँ शामिल हैं ।[4] भारतीय ज्ञानमीमांसा के विद्वानों का तर्क है कि ऐसी प्रणालियाँ समग्र, गतिशील और एकीकृत होती हैं, जो आधुनिक वैज्ञानिक ढाँचों की विशिष्ट विभाजनकारी प्रवृत्ति का विरोध करती हैं ।[5] IKS की मुख्य विशेषताओं में शामिल हैं:

2.1 समुदाय-आधारित और संदर्भ-विशिष्ट ज्ञान

IKS एक स्थित ज्ञान है, जो विशेष परिदृश्यों, जलवायु, अनुष्ठानों और सामाजिक संरचनाओं से अविभाज्य है। उदाहरण के लिए, हिमालयी क्षेत्र में बौद्ध समुदाय, स्तूप अनुष्ठानों को पशुपालन और कृषि के मौसमी चक्रों के साथ एकीकृत करते हैं ।[6]

2.2 मौखिक और मूर्त संचरण

IKS औपचारिक लिखित निर्देशों के बजाय भागीदारी, कहानी कहने, प्रशिक्षुता और अनुष्ठान प्रदर्शन के माध्यम से पीढ़ियों के बीच हस्तांतरित होता है ।[7] लिखित ब्लूप्रिंट के बजाय, स्तूप निर्माता अक्सर याद किए गए आनुपातिक नियमों, वंश परंपराओं और अनुष्ठान प्रोटोकॉल पर निर्भर रहते हैं ।

2.3 क्षेत्रों का समग्र एकीकरण

पारिस्थितिकी, ब्रह्मांड विज्ञान, चिकित्सा, नैतिकता और शिल्प कौशल IKS के भीतर आपस में जुड़े हुए हैं। स्तूप इस एकीकरण को मूर्त रूप देते हैं: वे ब्रह्मांडीय रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं, भू-वैज्ञानिक और पारिस्थितिक सिद्धांतों के अनुसार स्थित होते हैं, आसपास के उपवनों में औषधीय पौधों को शामिल करते हैं, और उनके निर्माण में विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान को शामिल करते हैं ।

2.4 अनुकूलनशीलता और लचीलापन

IKS अनुकूलनीय है, जो समुदायों को पर्यावरणीय और सामाजिक परिवर्तनों पर प्रतिक्रिया करने की अनुमति देता है ।[8] स्तूप ऐतिहासिक रूप से स्थानीय सामग्रियों, जलवायु परिस्थितियों और शिल्प परंपराओं के अनुकूल रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार के रूप सामने आए हैं: भारतीय स्तूप, तिब्बती चोर्टेन, बर्मी ज़ेडी, थाई चेडी और नेवार चैत्य ।

2.5 नैतिक और सामाजिक मानदंडों का एकीकरण

IKS मूल्यों, जिम्मेदारियों और नैतिक ढाँचों को प्रसारित करता है । स्तूप साझा अनुष्ठानों, सामूहिक श्रम और पुण्य कमाने की परंपरा के लिए केंद्र बिंदु के रूप में कार्य करके सामुदायिक मानदंडों को सुदृढ़ करते हैं ।

IKS के ढाँचे के भीतर स्तूपों को समझने से हम उन्हें केवल स्थापत्य संरचनाओं के रूप में नहीं, बल्कि गतिशील सांस्कृतिक संस्थानों के रूप में सराह सकते हैं जो जानने के भारतीय तरीकों को कूटबद्ध और सक्षम करते हैं । वे ऐसे नोड्स का प्रतिनिधित्व करते हैं जहाँ पारिस्थितिक, ब्रह्मांडीय, सामाजिक-राजनीतिक और शिल्प ज्ञान एक साथ मिलते हैं ।

III. बौद्ध स्तूप का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ

3.1 उत्पत्ति और प्रारंभिक विकास

गंगा के मैदानी इलाके में सबसे पुराने पुरातात्विक स्तूप—जैसे सांची, भरहुत, पिपरहवा और अमरावती के स्तूप—लगभग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सामने आए, खासकर सम्राट अशोक के शासनकाल के दौरान मौर्य संरक्षण में ।[9] ये स्तूप दोहरे कार्य करते थे: बुद्ध के शारीरिक अवशेषों के लिए अवशेष पात्र और शुरुआती बौद्ध समुदायों के लिए शैक्षिक उपकरण, जिसमें नक्काशीदार रेलिंग और द्वार जातक कथाओं और नैतिक शिक्षाओं को दर्शाते थे ।

अशोक के शिलालेखों और पुरातात्विक अध्ययनों से पता चलता है कि स्तूपों को रणनीतिक रूप से व्यापार मार्गों, मठों के नेटवर्क और जनसंख्या केंद्रों के साथ रखा गया था ।[10] उनका स्थान भिक्षुओं, व्यापारियों और तीर्थयात्रियों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाता था जिससे स्तूप ज्ञान के प्रसार के में प्रमुख बन गए । इन शुरुआती स्तूपों में ब्रह्मांडीय प्रतीकवाद निहित था: गुंबद (अंड) ब्रह्मांडीय पर्वत का प्रतिनिधित्व करता था, हर्मिका स्वर्ग का प्रतीक थी, और यष्टि ब्रह्मांडीय धुरी का प्रतिनिधित्व करती थी ।[11] स्नोडग्रास के विश्लेषण से पता चलता है कि स्तूप की ज्यामिति परिष्कृत ब्रह्मांडीय मॉडलों से उत्पन्न हुई जो सूक्ष्म जगत और स्थूल जगत को जोड़ते थे ।[12]

3.2 अंतर-क्षेत्रीय प्रसार और स्थानीयकरण

पहली शताब्दी ईसा पूर्व से स्तूप व्यापार मार्गों (विशेषकर सिल्क मार्ग), मठों के मिशन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से पूरे एशिया में फैल गए ।[13] जैसे-जैसे स्तूप नए पारिस्थितिक और सांस्कृतिक परिदृश्यों में पहुँचे, उन्होंने स्थानीय ज्ञान परंपरा को आत्मसात किया:

तिब्बत में, स्तूपों (चोर्टेन) में बॉन भू-आकृति विज्ञान के सिद्धांत, स्थानीय ब्रह्मांड विज्ञान और स्थानीय अंतिम संस्कार प्रथाओं को शामिल किया गया था ।[14]

नेपाल में, नेवार चैत्यों ने स्थानीय कलात्मक तकनीकों, धातु ढलाई परंपराओं और सामुदायिक अनुष्ठान चक्रों को एकीकृत किया ।[15]

श्रीलंका में, रुवनवेलिसाया जैसे स्तूपों में जल विज्ञान और सिंचाई-आधारित ब्रह्मांड विज्ञान को शामिल किया गया ।[16]

म्यांमार और थाईलैंड में, स्तूप दक्षिण पूर्व एशियाई योग्यता-आधारित अनुष्ठान अर्थव्यवस्थाओं और स्थानीय सोने के काम की परंपराओं के साथ विलय हो गए ।[17]

इस प्रकार, स्तूप एक अखिल-बौद्ध प्रतीक और भारतीय ज्ञान का स्थानीय रूप से अनुकूलित भंडार दोनों है ।

3.3 एक सामाजिक संस्था के रूप में स्तूप

एक धार्मिक स्मारक होने के अलावा, ऐतिहासिक रूप से स्तूप इन कामों के लिए भी इस्तेमाल होते थे:

मठवासी शिक्षा के केंद्र

अपनी नक्काशीयों में दृश्य ज्ञान के अभिलेखागार

सामुदायिक मिलन स्थल

स्थानीय इतिहास के भंडार

उपचार अनुष्ठानों के स्थल

क्षेत्रीय और पारिस्थितिक ज्ञान के संकेतक

मानव वैज्ञानिक ध्यान देते हैं कि स्तूप अक्सर चरागाह क्षेत्रों, जल अधिकारों, तीर्थयात्रा मार्गों और पवित्र स्थानों की सीमाओं को परिभाषित करने वाले क्षेत्रीय मार्करों के रूप में काम करते हैं।[18] कई क्षेत्रों में, स्तूप जानबूझकर झरनों, जंगलों या पहाड़ी चोटियों के पास रखे जाते हैं - जो जल विज्ञान, उर्वरता और भू-विज्ञान के भारतीय पारिस्थितिक ज्ञान को दर्शाते हैं।

3.4 प्रतीकवाद और सांकेतिकरण

स्तूप का स्वरूप ही जटिल ज्ञान परंपरा को सांकेतिक करता है:

आधार पृथ्वी तत्व (पृथ्वी) का प्रतिनिधित्व करता है।

अंड जल का प्रतीक है।

हर्मिका अग्नि (तेज) का प्रतिनिधित्व करती है।

शिखर के छल्ले वायु (वायु) का प्रतिनिधित्व करते हैं।

छत्र अंतरिक्ष (आकाश) का प्रतीक है।[19]

ये मौलिक पत्राचार प्रारंभिक भारतीय ब्रह्मांड विज्ञान से प्राप्त होते हैं और शैक्षणिक उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं, स्थापत्य प्रतीकवाद के माध्यम से सैद्धांतिक ज्ञान का संचार करते हैं।[20]

IV. वे तरीके जिनसे स्तूप भारतीय ज्ञान को एनकोड और ट्रांसमिट करते हैं

भारतीय ज्ञान परंपरा में स्तूप का महत्व न केवल उसके प्रतीकवाद में है, बल्कि उसके आसपास की प्रथाओं, कौशल और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के गतिशील समूह में भी है। स्तूप ज्ञान केंद्रों के रूप में काम करते हैं जहाँ शिल्प तकनीकें, अनुष्ठान निर्देश, कथा परंपराएँ, पारिस्थितिक ज्ञान और सामाजिक मानदंड एक साथ आते हैं। ज्ञान संचरण के ये तंत्र विविध हैं और अक्सर आपस में जुड़े होते हैं।

4.1 वास्तुकला ज्ञान और तकनीकी शिल्प संचरण

एक स्तूप के निर्माण के लिए ज्यामिति, सामग्री विज्ञान, पर्यावरणीय परिस्थितियों, संरचनात्मक इंजीनियरिंग और प्रतीकात्मक अनुपात परंपरा के उन्नत ज्ञान की आवश्यकता होती है।[21] भारतीय समुदायों में, ऐसा ज्ञान शायद ही कभी औपचारिक ग्रंथों में संहिताबद्ध होता है; इसके बजाय, इसे मौखिक परंपराओं, प्रशिक्षुता और वंश-आधारित शिल्प संचरण के माध्यम से संरक्षित किया जाता है।[22]

स्तूपों के निर्माण में पारंपरिक रूप से विशेष श्रेणी या वंशानुगत कारीगर समुदाय शामिल होते हैं। काठमांडू घाटी में, नेवार कारीगर- विशेष रूप से वाग्भांडारी और शिल्पकार- स्तूप के अनुपात, ईंट जोड़ने के पैटर्न, फिनियल के लिए धातु की ढलाई, और चूना, ईंट की धूल, गुड़ और प्राकृतिक रेशों से बने अनुष्ठान प्लास्टर मिश्रण का परिष्कृत ज्ञान रखते हैं।[23] संरचनात्मक निर्णय स्थानीय पारिस्थितिक ज्ञान से जुड़े होते हैं, जिसमें मानसून चक्र, मिट्टी की विशेषताओं और भूकंपीय पैटर्न की समझ शामिल है।[24]

लद्दाख और ज़ांस्कर के हिमालयी क्षेत्रों में, चोर्टेन बनाने वाले कारीगर ऊँचाई वाले जलवायु के अनुकूल स्थानीय पत्थर की चिनाई तकनीकों का उपयोग करते हैं, जिसमें सूखी पत्थर की दीवारें, मिट्टी का मोर्टार और तापमान की चरम सीमाओं के प्रति प्रतिरोधी नक्काशीदार लकड़ी के मुकुट शामिल हैं।[25] ये प्रथाएँ सदियों के पर्यावरणीय अनुकूलन और संसाधन प्रबंधन को एनकोड करती हैं।

इस प्रकार स्तूप पत्थर की एक पाठ्यपुस्तक के रूप में कार्य करता है, जो अपने रूप और निर्माण प्रथाओं के भीतर भवन विज्ञान और स्थानीय सामग्रियों के निहित ज्ञान को संरक्षित करता है।

4.2 अनुष्ठानिक ज्ञान और अनुष्ठानिक चक्र

स्तूपों पर किए जाने वाले अनुष्ठान IKS संचरण का एक प्रमुख माध्यम हैं। दैनिक परिक्रमा (प्रदक्षिणा), भेंट अनुष्ठान, मौसमी त्यौहार, अभिषेक समारोह और तीर्थयात्रा सर्किट सांप्रदायिक ज्ञान परंपरा को सुदृढ़ करते हैं। अनुष्ठान विशेषज्ञ—भिक्षु, लामा, वज्राचार्य, या गाँव के अनुष्ठान करने वाले—वंश-आधारित अनुष्ठानिक ज्ञान रखते हैं जो मौखिक रूप से याद करके और प्रदर्शन के माध्यम से प्रसारित होता है।[26] ये प्रथाएँ एन्कोड करती हैं:

चंद्र कैलेंडर के आधार पर अनुष्ठानों का समय

स्थानीय ज्योतिष के माध्यम से निर्धारित शुभ तिथियाँ

पुण्य-कर्म प्रथाओं में निहित नैतिक मानदंड

भेंट सामग्री से संबंधित वानस्पतिक ज्ञान

स्थानीय संगीत और प्रदर्शन कला परंपराएँ

भूटान और तिब्बत जैसे क्षेत्रों में, स्तूप ल्हाबसांग (धुआँ शुद्धिकरण) प्रथाओं के लिए केंद्रीय हैं जिसमें जुनिपर, रोडोडेंड्रोन, और आर्टेमिसिया प्रजातियों जैसे स्थानीय वनस्पतियों से बने भारतीय धूप मिश्रण शामिल हैं।[27] इन पौधों का ज्ञान—उनके आवास, उपयोग, और आध्यात्मिक महत्व—स्थानीय औषधकोश और पारिस्थितिक ज्ञान परंपरा का हिस्सा बनता है।

4.3 पर्यावरणीय और पारिस्थितिक ज्ञान

स्तूपों का स्थान अक्सर भारतीय पारिस्थितिक ज्ञान को दर्शाता है। स्तूप अक्सर झरनों, संगमों, पहाड़ी चोटियों, और जंगल के किनारों के पास बनाए जाते हैं—ऐसे स्थान जिन्हें आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली और पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है।[28] ये स्थानिक विकल्प जल विज्ञान, मिट्टी की उर्वरता, और जलवायु पैटर्न के बारे में ज्ञान को एन्कोड करते हैं। नेपाल और भूटान में एथनोबोटैनिकल स्टडीज़ से पता चला है कि स्तूपों के आसपास के पवित्र जंगल अक्सर औषधीय पौधों की दुर्लभ प्रजातियों की रक्षा करते हैं, जो स्थानीय उपचार ज्ञान के लिए एक भंडार का काम

करते हैं ।[29] स्तूपों के पास पेड़ काटने या जानवरों का शिकार करने पर लगाए गए धार्मिक प्रतिबंध समुदाय-आधारित संरक्षण प्रथाओं के रूप में काम करते हैं ।[30]

कई हिमालयी समुदायों में, स्तूप पर्यावरणीय बदलावों के बैरोमीटर का काम करते हैं । उदाहरण के लिए:

स्तूप के गुंबदों पर बर्फ जमना सर्दियों के मौसम की गंभीरता का संकेत देता है ।

मिट्टी के स्तूपों में दरारें मिट्टी के खिसकने या पानी के रिसाव का संकेत देती हैं ।

पहाड़ी की चोटी पर बने स्तूपों के आसपास हवा के पैटर्न चरवाहों को मौसमी प्रवास के दौरान मार्गदर्शन करते हैं ।[31]

इस प्रकार, स्तूप न केवल प्रतीकात्मक संरचनाओं के रूप में, बल्कि भारतीय परंपरा में जीवित पारिस्थितिक संकेतकों के रूप में भी काम करते हैं ।

4.4 मौखिक परंपराएं, स्मृति और स्थानीय इतिहास

स्तूप मौखिक कथाओं के केंद्र बिंदु होते हैं जो किसी स्थान के इतिहास, सामुदायिक वंश, चमत्कारी घटनाओं और क्षेत्रीय सीमाओं को बताते हैं ।[32] ये कहानियाँ एक मौखिक संग्रह बनाती हैं जो सामूहिक स्मृति और नैतिक ढाँचे को संरक्षित करती हैं ।

कई हिमालयी गाँवों में, एक स्तूप से जुड़ी मौखिक कथाएँ वर्णन करती हैं:

संस्थापक पूर्वज या वंश

बौद्ध संतों द्वारा स्थानीय आत्माओं या प्राकृतिक शक्तियों को वश में करना

ऐतिहासिक फसल खराब होना और जलवायु घटनाएँ

शाही संरक्षण या सामुदायिक श्रम योगदान

स्थानीय प्रवास का इतिहास

ये कथाएँ अक्सर भारतीय पारिस्थितिक और कृषि ज्ञान को कूटबद्ध करती हैं (जैसे, नदी के रास्तों में बदलाव, भूस्खलन का इतिहास, या चराई चक्र) ।[33]

इस प्रकार, स्तूप पर्यावरणीय इतिहास, सामाजिक स्मृति और सांस्कृतिक पहचान को जोड़ने वाले एक स्मृति सहायक के रूप में कार्य करता है ।

निष्कर्ष

बौद्ध स्तूप सिर्फ़ एक धार्मिक स्मारक से कहीं ज़्यादा हैं—ये भारतीय ज्ञान परंपरा का एक जीवित भंडार हैं। पूरे दक्षिण एशिया, हिमालय और दक्षिण-पूर्व एशिया में, स्तूप वास्तुकला, पारिस्थितिकी, रीति-रिवाज, नैतिकता, सामाजिक संबंधों और स्थानीय इतिहास से संबंधित ज्ञान को सहेजते और प्रसारित करते हैं। उनके रूप प्राचीन ज्यामितीय और ब्रह्मांडीय सिद्धांतों को दर्शाते हैं, जबकि उनकी निर्माण प्रक्रियाएं शिल्प परंपराओं, सामग्री ज्ञान और पर्यावरणीय अनुकूलन रणनीतियों को संरक्षित करती हैं । स्तूप ऐसे केंद्र के रूप में काम करते हैं जहाँ समुदाय पहचान, स्मृति और परिदृश्य पर बातचीत करते हैं। वे संस्कृति के मूर्त और अमूर्त आयामों को एकीकृत करते हैं, जो बौद्ध समाजों की बौद्धिक और आध्यात्मिक विरासत दोनों का प्रतीक हैं। सहस्राब्दियों से उनकी सहनशीलता भारतीय ज्ञान परंपरा की जीवन शक्ति और समकालीन विद्वत्ता, विरासत प्रबंधन और सतत विकास के लिए उनकी प्रासंगिकता को दर्शाती है ।

फिर भी, स्तूपों को महत्वपूर्ण चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है—शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन से लेकर शिल्प कौशल के नुकसान और व्यावसायीकरण तक। स्तूप-आधारित IKS को संरक्षित करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो समुदायों को सशक्त बनाए, पारंपरिक शिल्पों को पुनर्जीवित करे, पारिस्थितिक संदर्भों की रक्षा करे, और अनुष्ठान और भौतिक विरासत की आपस में जुड़ी प्रकृति को पहचाने ।

वैश्विक पारिस्थितिक संकट और सांस्कृतिक समरूपता के युग में, स्तूप परंपराएं इस बात की गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं कि मनुष्य भूमि, समुदाय और ब्रह्मांड के साथ सद्भाव में कैसे रह सकते हैं। उनकी स्थायी उपस्थिति हमें याद दिलाती है कि ज्ञान केवल किताबों में ही नहीं लिखा होता, बल्कि यह स्थानों, अनुष्ठानों, कहानियों, सामग्रियों और सामूहिक स्मृति में भी समाहित होता है ।

संदर्भ-ग्रंथ

[1] Alfred Foucher, *The Beginnings of Buddhist Art* (Paris: Paul Geuthner, 1917)

[2] D. Warren and B. McLeod, "Indigenous Knowledge Systems," *International Review of Education* 39, no. 2 (1993)

[3] Gregory Schopen, *Bones, Stones, and Buddhist Monks* (University of Hawai'i Press, 1997)

[4] Paul Sillitoe, *Indigenous Knowledge: Science and the Law* (London: Routledge, 2007).

[5] Linda Tuhiwai Smith, *Decolonizing Methodologies* (Zed Books, 1999)

[6] Toni Huber, *The Holy Land Reborn: Himalayan Religious Geography* (University of Chicago Press, 2008)

[7] Marcel Mauss, *Techniques of the Body* (Routledge, 1973).

[8] Fikret Berkes, *Sacred Ecology* (New York: Routledge, 2017).

[9] John Marshall, *A Guide to Sanchi* (Calcutta: Superintendent of Government Printing, 1918)

[10] Ibid

[11] S.L. Huntington, *The Art of Ancient India* (New York: Weatherhill, 1985).

[12] Adrian Snodgrass, *The Symbolism of the Stupa* (Ithaca: Cornell University Press, 1985)

[13] Xinru Liu, *Silk and Religion* (Oxford University Press, 1998)

[14] Charles Ramble, *The Navel of the Demoness* (Oxford University Press, 2008).

[15] Mary Slusser, *Nepal Mandala* (Princeton University Press, 1982)

[16] Senake Bandaranayake, *The Rock and Wall Paintings of Sri Lanka* (Lake House, 1986).

[17] Pierre Pichard, *Pagodas of Pagan* (Paris: École Française d'Extrême-Orient, 1992)
[18] Christoph von Fürer-Haimendorf, *Himalayan Barbary* (Oxford University Press, 1975).
[19] Snodgrass, *Symbolism of the Stupa*
[20] Alex Wayman, *The Buddhist Tantras* (London: Routledge, 1973).
[21] Robert Knox, *The Architecture of the Buddhist Stupa* (London: British Museum Press, 1992).
[22] Marcel Mauss, *Techniques, Technology and Civilization* (New York: Berghahn Books, 2006)
[23] Niels Gutschow and Bernhard Kölver, *Ordered Space: Concepts of Architecture and Society in Nepal* (Stuttgart: Steiner Verlag, 1975).
[24] Niels Gutschow, *Architecture of the Newars* (Stuttgart: Steiner Verlag, 2011)
[25] John Bray, "Material Culture of Ladakh," *The Tibet Journal* 12, no. 2 (1987).
[26] David Germano, "The Tantric Body," *History of Religions* 38 (1999).
[27] Pema Gyamtsho, *Forests and People in Bhutan* (Thimphu: RNRRC, 1996).
[28] Toni Huber, *The Cult of Pure Crystal Mountain* (Oxford University Press, 1999)
[29] S. Bhattarai et al., "Ethnobotany of the Nepal Himalaya," *Journal of Ethnobiology and Ethnomedicine* (2006)
[30] Johan Colding and Carl Folke, "Social Taboos and Resource Management," *Ecological Applications* 11 (2001).
[31] John Crook, *Himalayan Buddhist Villages* (London: HMSO, 1994)
[32] Charles Ramble, *The Navel of the Demoness*, 2008
[33] Georgios Halkias, *Luminous Bliss: A Religious History of Pure Land Buddhism in Tibet* (University of Hawai'i Press, 2013).